जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव के अवसर पर सभी लेखकों एवं पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें।

-जैनपथप्रदर्शक परिवार

वर्ष : 25, अंक : 15
नवम्बर (प्रथम) 2002

सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
प्रबन्ध सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित -

पाँचवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (टोडरमल स्मारक): आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की प्रेरणा से निर्मित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में रविवार, 13 अक्टूबर से मंगलवार, 22 अक्टूबर 2002 तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित वृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर तथा दिनांक 13 से 15 अक्टूबर 2002 तक अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

दिनांक 13 अक्टूबर 2002 को श्री साहू रमेशचन्दजी जैन दिल्ली की अध्यक्षता में शिविर का उद्घाटन श्री विमलकुमारजी जैन नीरू केमिकल्स द्वारा किया गया; जिसके विस्तृत समाचार गतांक में प्रकाशित किये जा चुके हैं।

दैनिक कार्यक्रमों का प्रारंभ प्रात: 5 बजे पूज्य गुरूदेवश्री के टेप प्रवचन से होता था। प्रात: एवं सायं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार की प्रारंभिक गाथाओं पर सरस शैली में मार्मिक प्रवचन हुये। आपके प्रवचनों से पूर्व प्रात: 8 से 8.30 बजे तक गुरूदेवश्री का सी.डी. प्रवचन होता था।

रात्रि में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. नरेन्द्रकुमारजी, डॉ. महावीरप्रसादजी आदि के एक-एक प्रवचन हुये।

प्रतिदिन प्रात: 5.30 से 6.15 बजे तक पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियाँधाना, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर आदि विद्वानों द्वारा प्रौढ़ कक्षा संचालित की गयी।

शिक्षण कक्षाओं में प्रतिदिन पण्डित कैलाशचन्दजी बुलन्दशहर द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा षट्कारक, ब्र. यशपालजी द्वारा गुणस्थान-विवेचन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा द्वारा परमभाव प्रकाशक नयचक्र, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित संजीवजी गोधा जयपुर द्वारा क्रमबद्धपर्याय, पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई द्वारा लघुजैन सिद्धान्त प्रवेशिका, डॉ. उज्ज्वला शहा द्वारा पंचलब्धि तथा पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री बण्डा एवं पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर द्वारा बालबोध पाठमाला की कक्षायें ली गयीं।

दोपहर में आयोजित व्याख्यानमाला के अन्तर्गत विविध विषयों पर पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, पण्डित क्रान्तिकुमारजी पाटनी इन्दौर, पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा, पण्डित कमलकुमारजी पिड़ावा, ब्र.कैलाशचन्दजी 'अचल' ललितपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के व्याख्यान हुये। इसके पूर्व प्रतिदिन महाविद्यालय के वर्तमान छात्रों द्वारा प्रवचन हुये।

रविवार, दिनांक 13 अक्टूबर से मंगलवार, 15 अक्टूबर 2002 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 26 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ, जिसके विस्तृत समाचार पृष्ठ-5 पर देखें।

रविवार, दिनांक 20 अक्टूबर को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं भारतवर्षीय वीतराग-विज्ञान पाठशाला समिति का अधिवेशन श्री बालचन्दजी पाटनी कलकत्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्यअतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई तथा विशिष्ट अतिथि श्री शान्तिलालजी अलवर एवं श्री जगनमलजी सेठी जयपुर मंचासीन थे।

दिनांक 22 अक्टूबर को समापन समारोह की अध्यक्षता श्री भबूतमलजी भण्डारी बैंगलोर ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री महावीर प्रसादजी सरावगी कोलकाता, श्री श्रेयांस जैन कोलकाता एवं श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई मंचासीन थे।

इस अवसर पर शिविर की शैक्षणिक उपलब्धियों की जानकारी पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने तथा आय-व्यय की रिपोर्ट पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा ने सुनाई। अन्त में पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया।

शिविर में भावदीपिका, मोक्षमार्गप्रकाशक, समयसार, षट्कारक अनुशीलन, अपनत्व का विषय, णमोकार महामंत्र-गुजराती, अष्टपाहुड पद्यानुवाद, जैनशतक आदि ग्रन्थों का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर 60 हजार रुपये का साहित्य एवं 26 हजार रुपये के कैसेट्स घर-घर पहुँचे।

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन

17

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे .....)

गणधरदेव ने दिव्यध्वनि का सार संक्षेप में समझाते हुए कहा कि ह्न सम्यग्दर्शन ही एकमात्र धर्मरूप वृहद् वृक्ष की गहरी जड़ है, जिसके आधार पर चारित्र एवं धर्म टिक रहा है। उस सम्यग्दर्शन का स्वरूप इस प्रकार है ह्न

तदनन्तर तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ का समवशरण धर्मामृत की वर्षा करता हुआ अनेक देशों में विहार करने लगा। इस धर्मसभा में अट्ठाईस गणधर थे। तीस हजार मुनि थे, पचास हजार आर्यिकायें, एक लाख व्रती/अव्रती श्रावक एवं तीन लाख श्राविकायें थीं।

मुनिसुव्रतनाथ की पूर्ण आयु तीस हजार वर्ष की थी, जिसमें साढ़े सात हजार वर्ष कुमारकाल में, पंद्रह हजार वर्ष राज्यकाल में तथा साढ़े सात हजार वर्ष संयमी/मुनि केवलीकाल में व्यतीत हुये। आपका धर्मतीर्थ प्रवर्तन छह लाख वर्ष तक अखण्ड रूप से चलता रहा। आयु के अन्त में सम्मेदाचल (शिखरजी) पर्वत पर कर्मों के बन्धन से मुक्त हुए। मुक्त होने पर पूजन/अर्चन द्वारा इन्द्रों ने उनका मोक्षकल्याणक मनाया।

सोलहवें सर्ग का अन्त मंगल करते समय संसार को जीतने वाले धीर-वीर तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र को स्मरण करते हुए जिनसेन आचार्य कामना करते हैं कि ह्न वे जिनेन्द्र हमारे लिए समाधि (चित्त की स्थिरता) और बोधि (रत्नत्रय) की प्राप्ति करावें।

सत्रहवे सर्ग में बीसवे तीर्थंकर के गृहस्थ जीवन एवं उनकी कुल परम्परा का परिचय कराते हुए कहा है कि 'राजामुनिसुव्रतनाथ के पुत्र सुव्रत हरिवंश के स्वामी हुए, उन्होंने समस्त पृथ्वी को तो जीत ही लिया था, साथ ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद एवं मात्सर्य आदि आत्मा के अन्तरंग शत्रुओं को भी उन्होंने जीत लिया था; इसप्रकार वे धर्म, अर्थ और काम पुरुषार्थ रूप त्रिवर्ग के मार्ग के प्रवर्तक थे।

राजा सुव्रत के दक्ष नाम का अत्यन्त चतुर पुत्र हुआ। वे दक्ष को राज्य का पदभार सौंपकर अपने पिता तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ के समीप जाकर दीक्षित हो गये और तपोबल के द्वारा उग्र पुरुषार्थ कर अपवर्ग (मोक्ष) को प्राप्त हो गये, संसार सागर के दुःखों से मुक्त हो गये।

राजा दक्ष को 'इला' नामक रानी से एलेय नामक पुत्र एवं मनोहारी नाम की पुत्री हुई। जिसप्रकार शुक्लपक्ष में ज्यों-ज्यों चन्द्र बढ़ता है, उसकी चाँदनी भी बढ़ जाती है; उसीप्रकार ऐलेय के साथ उसकी बहिन मनोहारी भी दिन प्रति बढ़ती गयी। जब 'मनोहारी' युवती हुई तो वह अपने सौन्दर्य से सर्वांग सुन्दर रति को भी लज्जित करनेवाली यथा नाम तथा गुण सम्पन्न हो गई। उसके सौन्दर्य से और की तो बात ही क्या, उसके पिता राजा दक्ष का मन भी विचलित हो गया। वह भी काम के वशीभूत होकर, उसे पत्नी के रूप में पाने की युक्तियाँ सोचने लगा।

जब व्यक्ति कामान्ध हो जाता है तो उसका सारा विवेक समाप्त हो जाता है, उसे न्याय-अन्याय तो दिखाई देता ही नहीं, इस जन्म में लोकनिन्दा का भय भी नहीं रहता और परलोक में पाप के फलस्वरूप कुगति के दुःखों को भोगना पड़ेगा, वह इसकी परवाह भी नहीं करता।

अपनी पुत्री पर मोहित राजा दक्ष ने अपनी पुत्री मनोहारी के साथ ब्याह रचाने पर जनता का विरोध न सहना पड़े, एतदर्थ एक कुयुक्ति सोची। एक दिन उसने प्रजा को अपने घर बुलाकर उनसे छल से पूछा कि आप सब पूर्वा पर विरोध रहित विचार कर उत्तर दें। हमारी एक समस्या का समाधान करें। आप लोग व्यवहार कुशल हैं, सोच-समझकर ही मार्गदर्शन करेंगे। आप लोग जैसा कहेंगे हम वही करेंगे। आप लोग यह बतायें कि – यदि हाथी, घोड़ा, स्त्री आदि कोई वस्तु जो संसार में बहुमूल्य हो, अमूल्य हो और प्रजा के योग्य न हो, प्रजा की सामर्थ्य-शक्ति से बाहर हो तो उसका स्वामी राजा हो सकता है या नहीं ?

प्रजाजनों में कितने ही प्रबुद्ध लोग बहुत देर तक सोच-विचार कर इसी निर्णय पर पहुँचे कि जो प्रजा के अधिकार या शक्ति से परे हो, प्रजा की हैशियत से बाहर हो, उस पर तो राजा का ही अधिकार बनता है, राजा ही उसका स्वामी हो सकता है; अतः सबने एकमत से कहा कि महाराज! राजा के सिवाय उसका स्वामी और कौन हो सकता है? जिसप्रकार समुद्र हजारों नदियों और उत्तम रत्नों की खान है, इसी कारण वह रत्नाकर कहलाता है, उसीप्रकार राजा भी इस लोक में अनर्घ्य (अमूल्य वस्तुओं) का उपभोक्ता है, स्वामी है; अतः समस्त पृथ्वी, जो आपके आधीन है, उसमें उपलब्ध सभी उत्तमोत्तम वस्तुओं के आप ही अधिकारी हैं, उन्हें आप निःसंकोच भोगें।

इसप्रकार विपरीत बुद्धि राजा दक्ष ने छल-कपट से प्रजा से हाँ में हाँ भराकर कहा कि ह्न आप लोगों की जो अनुमति है, राय है, वो ही करूँगा।

तदनन्तर राजा दक्ष ने अपनी पुत्री का स्वयं ही कर ग्रहण कर लिया। नीतिकार कहते हैं कि – कामरूपी पिशाच से गृहीत मनुष्य की मर्यादा ही क्या है? कामी मानव सब मर्यादाओं को छोड़ देता है। राजा दक्ष की रानी इला पति के इस कुकृत्य से बहुत रुष्ट हुई इसलिए उसने पुत्र ऐलेय को पिता से फोड़ लिया, अलग कर लिया। सो उसने ठीक ही किया; क्योंकि सज्जन लोग भले कामों का ही साथ देते हैं, बुरे कामों का साथ कभी नहीं दे सकते। जब मनुष्य पतित हो जाता है, पाप प्रवृत्ति में पड़ जाता है तो उसका पुण्य क्षीण होने लगता है और सब अनुकूल संयोग साथ छोड़ देते हैं; भले ही वह पत्नि एवं पुत्र ही क्यों न हों?

बड़े-बड़े सामन्तों से घिरी इला रानी अपने ऐलेय पुत्र को लेकर दुर्गम स्थान में चली गई और वहाँ स्वर्गपुरी के समान एक नगर बसाया, जो इलावर्धन नाम से प्रसिद्ध हुआ। अपने पुत्र ऐलेय को वहाँ का राजा बनाया, जो हरिवंश के तिलक के रूप में जाना जाने लगा। ऐलेय ने भी अन्य अनेक नगर बसाये और अन्य छोटे-छोटे राजाओं को जीतकर अपने राज्य का विस्तार किया। जीवन के अन्तिम चरण में वह भी अपने पुत्र कुणिम को राज्य सौंपकर मुनिव्रत अंगीकार कर तपश्चरण करने हेतु वन में चला गया।

(क्रमशः)

कहान-वाणी

पर्याय भी एक समय का सत् है

(प्रवचन रत्नाकर भाग-9 से)

अहा ! भाई, सहजानन्द मूर्ति, अकेले ज्ञान व आनन्द का दल, सदा एकरूप विद्यमान, त्रिकाली ध्रुव सम्यग्दर्शन का विषय है।

प्रवचनसार में कहा है कि - ज्ञेयतत्त्व की और ज्ञानतत्त्व की यथार्थ प्रतीति जिसका लक्षण है, वह सम्यग्दर्शन पर्याय है। अहा ! ऐसा सम्यग्दर्शन जो इस जीव ने अनन्तकाल में प्रगट नहीं नहीं किया और जो मोक्ष महल की प्रथम सीढ़ी है, वह सम्यग्दर्शन त्रिकाली ध्रुव एक ज्ञायकद्रव्य से भिन्न है।

समयसार के संवर अधिकार में आया है कि पुण्य-पाप के भाव और व्यवहार रत्नत्रय के जितने विकल्प हैं, वे सब रागादिभाव त्रिकाली द्रव्य से भिन्न हैं। देखो ! भाव तो भिन्न हैं ही, राग के प्रदेश भी भिन्न हैं - ऐसा वहाँ कहा है। अकेले आनन्द के दल प्रभु आत्मा में से विकार उत्पन्न नहीं होता। अत: विकार का क्षेत्र त्रिकाली द्रव्य के क्षेत्र से भिन्न है। अनन्त गुणधाम प्रभु आत्मा त्रिकाल शुद्ध असंख्यातप्रदेशी वस्तु है। उसकी पर्याय में दया, दान आदि के विकल्प उठते हैं, वे त्रिकाली स्वभाव से तो भिन्न हैं ही, साथ ही क्षेत्र से भी भिन्न हैं। दोनों को भिन्न-भिन्न वस्तु कहा है। वस्तुत: एक वस्तु की अन्य वस्तु नहीं है। चिद्विलास में भी ऐसा कहा है कि - पर्याय के कारण पर्याय होती है, द्रव्य-गुण के कारण नहीं।

इस सिद्धान्तानुसार मोक्षमार्ग की जो पर्याय है, उस पर्याय का कर्ता पर्याय, पर्याय का कर्म पर्याय, पर्याय का सम्प्रदान, अपादान व अधिकरण भी पर्याय ही है। पर्याय एक समय का सहज सत् है।

इसप्रकार वीतराग का मार्ग वीरों का मार्ग है, कायरों का नहीं।

देखो ! आत्मभान होने के पश्चात् भी ज्ञानी को शुभभाव के अतिरिक्त अशुभभाव भी आते हैं। उसको कदाचित् आर्त-रौद्र ध्यान का तथा विषयभोगों का भाव भी होता है। कमजोरी के कारण ये भाव होते हैं, परन्तु ज्ञानी को इन भावों के होने में उमंग नहीं होती, उत्साह नहीं आता, मजा नहीं आता। वह यह तो जानता है कि - मजा तो मेरे स्वरूप में ही है, अन्यत्र कहीं भी मजा है ही नहीं। यहाँ कहते हैं कि - अपूर्व आनन्द का स्वाद देनेवाली मोक्षमार्ग की पर्याय भी द्रव्य से कथंचित् भिन्न है। इतना ही नहीं, मोक्ष की पर्याय भी द्रव्य से कथंचित् भिन्न है।

तत्त्वदृष्टि की महिमा

त्रिलोकी नाथ अरहंत परमेश्वर कहते हैं कि व्यवहाररत्नत्रय तो कथनमात्र मोक्षमार्ग है। यह तो भगवान आत्मा से भिन्न है ही; किन्तु त्रिकाली ध्रुव आत्मा के आलम्बन से जो अन्तर में सत्यार्थ मोक्ष का मार्ग प्रगट हुआ, उस मोक्षमार्ग की पर्याय भी त्रिकाली शुद्धपारिणामिक भाव लक्षण निज परमात्मद्रव्य से कथंचित भिन्न है; क्योंकि द्रव्य त्रिकाली है और पर्याय का काल तो एक समय का है।

भगवान आत्मा शुद्ध पारिणामिकभाव लक्षण वस्तु पूर्ण एक चैतन्यमय है, वह त्रिकालभावरूप है, भावनारूप नहीं है; जबकि उसके आश्रय से जो मोक्ष का मार्ग प्रकट हुआ है, वह भावना रूप है, त्रिकालभावरूप नहीं।

जो अज्ञानी मूढ जीव स्त्री-पुत्र, बाग-बगीचों में अपना कर्तृत्व एवं ममत्व स्थापित किये बैठे हैं उनकी तो बात ही क्या करें? वे तो मोक्षमार्ग से कोसों दूर हैं। यहाँ तो यह कह रहे हैं कि मोक्षमार्ग की पर्याय वर्तमान भावनारूप होने से त्रिकाली ध्रुव निज परमात्मद्रव्य से कथंचित भिन्न है। ऐसा भेद जिसे भासित नहीं हुआ, वे भी मोक्ष के मार्ग से दूर हैं।

बारह भावनाएं जो कही हैं, उनमें प्रथम तो ये सब भावनाएं विकल्परूप होती हैं, पश्चात् उनका व्यय होकर निर्विकल्प पर्यायें होती हैं। ये निर्मल निर्विकल्प पर्यायें जो अन्दर में प्रगट हुईं, वे भावनारूप हैं और त्रिकाली एकरूप परमात्मद्रव्य भावरूप है। शुद्ध पारिणामिकभाव त्रिकाली स्वभाव परमानन्दमय प्रभु भावनारूप नहीं है। उसके आश्रय से प्रकट हुई मोक्ष की कारणरूप दशा भावनारूप है।

भाई! मोक्षमार्ग की ये पर्यायें जो कि पवित्र हैं, आनंदरूप हैं, अबंध हैं; वे भी जब त्रिकाली शुद्ध द्रव्य से कथंचित् भिन्न हैं तो फिर बंधरूप दया-दान आदि या रागादि की शुभाशुभ पर्यायों की तो बात ही क्या करें? क्या राग करते-करते भी वीतरागता प्रकट होना संभव है? नहीं, कदापि ऐसा नहीं होता।

अहा ! मोक्ष के कारणरूप जो अबंध परिणाम हैं, वे भावनारूप हैं तथा त्रिकाली शुद्ध द्रव्यस्वभाव भावनारूप नहीं है। अहो! ऐसी शुद्ध तत्त्वदृष्टि करके चक्रवर्ती व तीर्थंकरों के पुत्र तथा लकड़हारों जैसे निर्धनों के आठ-आठ वर्ष के बालक केवलज्ञान प्रकट करके अल्पकाल में मोक्षपद प्राप्त कर लेते हैं।

- प्रवचनरत्नाकर भाग 9, पृष्ठ - 116-117

विभिन्न राष्ट्रीय प्रतियोगितायें सानन्द सम्पन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के 26 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर विभिन्न राष्ट्रीय प्रतियोगितायें निम्नानुसार सम्पन्न हुईं –

दिनांक 13 अक्टूबर को रात्रि में राष्ट्रीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया; जिसमें अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा–बापूनगर के नितिन जैन ने प्रथम तथा अभिषेक जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। साथ ही सिलवानी शाखा से शोभित जैन को एवं महिला शाखा उदयपुर से श्रीमती ममता जैन को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया। प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, डॉ. महावीरप्रसादजी टोकर तथा पण्डित पवनकुमारजी शास्त्री किशनगढ़ थे। प्रतियोगिता की अध्यक्षता श्री बालचन्दजी पाटनी, कोलकाता ने की। संचालन मनोज जैन शास्त्री, अभाना ने किया।

दिनांक 14 अक्टूबर को राष्ट्रीय अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया; जिसमें शाखा बापूनगर से नितिन जैन भिण्ड एवं अमित जैन लुकवासा ने प्रथम स्थान तथा अभिषेक जैन एवं अनुपम जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रोत्साहन पुरस्कार मेरठ, पिड़ावा तथा उदयपुर शाखा को मिला। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री वीरेन्द्रवीरजी फिरोजाबाद ने तथा संचालन श्री पीयूष जैन एवं श्री चिन्मय जैन ने किया।

इस अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय भक्ति संध्या प्रतियोगिता में शाखा पिड़ावा ने प्रथम स्थान तथा बापूनगर शाखा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। शाखा लूणदा, शाखा बापूनगर–सी एवं बापूनगर–बी को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

लघु नाटिकाओं का मंचन

जयपुर : 1. शिक्षण–शिविर के अवसर पर दिनांक 17 अक्टूबर को आध्यात्मिक नाटिका 'अदालत के द्वार : पुण्य मोक्षमार्ग या संसार' का मंचन किया गया। इसके माध्यम से पुण्य–पाप के संबंध में फैली अनेक विकृतियों को सुलझाने तथा पुण्य को अशुभभाव की अपेक्षा उपादेय तथा मोक्षमार्ग में हेय बताने का प्रयास किया गया।

अन्त में अध्यक्षीय भाषण के रूप डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने कार्यक्रम की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। नाटिका के लेखक पण्डित संतोष सावजी थे। निर्देशन पण्डित अनिलजी मुम्बई ने तथा संचालन पण्डित महावीर मांगुलकर ने किया।

2. इसी अवसर पर दिनांक 19 अक्टूबर को प्रथमानुयोग पर आधारित क्षमाभाव की प्रेरणा देनेवाला नाटक 'क्षमा के पथ पर' का मंचन किया गया। नाटिका के लेखक पण्डित चैतन्य जैन खड़ैरी थे। निर्देशन पण्डित जिनेन्द्रकुमार जैन ने तथा संचालन पण्डित विजयकुमार गंगवाल ने किया।

अन्त में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल तथा ब्र. यशपालजी जैन ने अपने उद्बोधन से बालकों का उत्साहवर्धन किया।

सॉफ्ट ड्रिंक्स से सावधान !

मेहमाननवाजी हम भारतीयों की विशेषता है। घर पहुँचते ही पूछेंगे, 'चाय पीयेंगे या ठण्डा ?' परन्तु अमेरिका की 'दि अर्थ आईलैण्ड जर्नल' के शोध अनुसार हर कोका कोला/पेप्सी/ थम्सअप आदि की बोतल में 40 से 72 मिलीग्राम तक नशीले तत्व, ग्लिसरीन, अल्कोहल, ईसटरगम व पशुओं से प्राप्त गिलस्रोल पाये जाते हैं।

आदमी की लाश की हड्डियाँ व दांतों को गलाने में पृथ्वी को कई वर्ष लग जाते हैं। पर सॉफ्ट ड्रिंक में उसे 10 दिनों तक पड़े रहने दीजिये, वे गल जायेंगे।

इसप्रकार कई तरह के कोला पीकर अपने पेट में हम कैमिकल्स ही डाल रहे हैं और अपनी अंतड़ियों, यकृत, शरीर को भारी नुकसान पहुँचा रहे हैं। इसका प्रमाण मिला दिल्ली विश्वविद्यालय की एक प्रतियोगिता में सर्वाधिक कोला कौन पी सकता है, मुकाबले में एक छात्र ने आठ बोतलें पी लीं और इसकारण पेट में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा अधिक होने से उसकी मृत्यु हो गई। ऐसा होने से वहाँ की कैंटीन में सॉफ्ट ड्रिंक्स बेचने पर ही प्रतिबंध लगाना पड़ा।

सम्मेदशिखरजी में इन्टरनेट द्वारा आवास आरक्षण की सुविधा

भारत एवं विदेशों में रह रहे सभी साधर्मी बन्धुओं को सूचित करते हुये अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि परम पावन तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी के वन्दनार्थ आनेवाले यात्री अब आवास हेतु अपना आरक्षण इन्टरनेट द्वारा करा सकते हैं।

श्री बंगाल–बिहार–उड़ीसा दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, कोलकाता अन्तर्निहित श्री दिगम्बर जैन तेरहपंथी कोठी मधुबन में यात्री सुविधा हेतु यह व्यवस्था प्रारंभ की गई है एवं सम्मेदशिखरजी मधुबन से सम्बन्धित सभी सूचनायें एवं व्यवस्थाओं की जानकारी हेतु एक वेवसाइट बनाई गई है ।

आवास आरक्षण एवं सभी प्रकार की जानकारी www.sammedshikhar.com से ले लेवें । अपना आवास आरक्षण एवं सूचनायें प्रदान करने हेतु info@sammedshikhar.com E-mail पर सम्पर्क करें।

वैराग्य समाचार

1. श्रीमती विमलादेवी परवार, इन्दौर का दिनांक 14–9–2002 को 70 वर्ष की आयु में समताभावपूर्वक देहावसान हो गया है। आप अत्यन्त धार्मिक विचारों की महिला थीं। आपकी स्मृति में आपके परिवार की ओर से पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 1000/– रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

2. वानवडी–पुणे निवासी श्रीमती राजमती सुधीरचन्द्र शहा का एक भीषण उपघात में दिनांक 22–9–2002 को स्वर्गवास हो गया है। आप एक धर्मनिष्ठ महिला थीं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 26 वाँ वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 26 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा आयोजित पाँचवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर के दौरान दिनांक 13 से 15 अक्टूबर तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर के प्रांगण में सानन्द सम्पन्न हुआ।

अधिवेशन का मुख्य समारोह दिनांक 15 को सायंकाल सम्पन्न हुआ; जिसकी अध्यक्षता ब्र. यशपालजी ने की व उद्घाटन लन्दन से पधारे श्री कमल शाह व श्री हेमल शाह ने किया।

इस अवसर पर मुख्यअतिथि के रूप में श्री छगनराजजी भण्डारी बैंगलोर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री रमेशजी भण्डारी बैंगलौर, डॉ. शरदजी गोधा जयपुर तथा श्री नरेशकुमारजी लुहाड़िया दिल्ली मंच को सुशोभित कर रहे थे। इनके अतिरिक्त फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, कोषाध्यक्ष पं. अभयकुमारजी छिन्दवाड़ा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी के अन्य सदस्यगण तथा अनेकों प्रान्तीय पदाधिकारीगण भी मंचासीन थे, जिनमें राजस्थान प्रान्त के उपाध्यक्ष पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री, मंत्री श्री राजकुमारजी शास्त्री व प्रान्तीय प्रतिनिधि जिनेन्द्र जैन व हेमन्त जैन शामिल थे ।

फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने फैडरेशन की स्थापना के समय की परिस्थितियों का उल्लेख करते हुये स्पष्ट किया कि विवादों के बीच जन्मा यह संगठन, समाज का एक व एकमात्र निर्विवाद संगठन है, जिसने सदा ही समस्त विद्वानों से अपने आप को दूर रखते हुये मात्र तत्त्वप्रचार के रचनात्मक कार्यक्रमों को ही अपनाया है। उन्होंने फैडरेशन की अनेकों महान उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुये स्पष्ट किया कि हम सभी उपलब्धियों का श्रेय फैडरेशन की अच्छी योजनाओं व कार्यप्रणाली तथा समर्पित कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को जाता है।

राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने इस वर्ष फैडरेशन द्वारा सम्पन्न समस्त कार्यक्रमों का ब्यौरा प्रस्तुत किया व आगामी वर्ष के लिये कार्यक्रमों की घोषणा की। वार्षिक आय-व्यय का लेखा पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने प्रस्तुत किया।

उक्त अधिवेशन में देशभर से पधारे प्रतिनिधियों में से महिला शाखा उदयपुर से श्रीमती किरण जैन, मुमुक्षु मण्डल उदयपुर से श्री निर्मलजी अखावत, मेरठ शाखा से श्री पवनकुमार जैन एवं अलवर शाखा के प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी शाखाओं द्वारा संचालित गतिविधियों का विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया। राजस्थान प्रान्त की रिपोर्ट मंत्री श्री राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर ने प्रस्तुत की।

अधिवेशन में आदरणीय पण्डित हिम्मतभाईजी, सोनगढ़ के निधन पर एक शोक प्रस्ताव भी पारित किया गया तथा नव बार णमोकार मंत्र का उच्चारण कर श्रृद्धांजली व्यक्त की गई ।

विभिन्न प्रतियोगिताओं के राष्ट्रीय पुरस्कारों का वितरण श्री हेमल शाह लंदन, श्री कमल शाह लन्दन व श्री रमेश भण्डारी बैंगलोर के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। पुरस्कार वितरण के कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के सफल संयोजक पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने किया।

अपने अध्यक्षीय उदबोधन में ब्र. यशपालजी ने स्पष्ट किया कि 'जोशीले युवक, होंश से वंचित न रहें, इसीलिये मैंने आज के इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करना स्वीकार किया है।' उत्तरांचल के नये क्षेत्रिय प्रतिनिधि के रूप में श्री अमित जैन रुड़की, म.प्र. प्रान्त के महाकौशल एवं छत्तीसगढ़ क्षेत्र के प्रदेशाध्यक्ष के रूप में श्री अशोक जैन रायपुर तथा जयपुर शहर के क्षेत्रीय प्रतिनिधि के रूप में श्री भागचन्दजी शास्त्री का मनोनयन किया गया है; जिन्हें बाद में ब्र. यशपालजी द्वारा शपथ दिलायी गयी।

अधिवेशन सभा का संचालन फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मुम्बई ने किया।

अन्त में श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल ने सभी अभ्यागतों के प्रति आभार व्यक्त किया तत्पश्चात् पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के आध्यात्मिक प्रवचन तथा 'आत्मगीत' गायन के साथ अधिवेशन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

अधिवेशन में राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, छत्तीसगढ़, उत्तरांचल व दिल्ली आदि प्रान्तों की अनेकों शाखाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित हुये।

इसके पूर्व दिनांक 13 अक्टूबर को राष्ट्रीय कार्यकारिणी की एवं विशेष आमंत्रित अतिथियों की मीटिंग हुयी; जिसमें संगठन की वर्तमान संदर्भों में भूमिका के बारे में विचार किया गया। इसी दिन सायं 6.30 बजे फैडरेशन के समस्त सदस्यों की आमसभा का आयोजन हुआ; जिसमें गाँव-गाँव से आये शाखा सदस्यों ने अपनी गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

अधिवेशन के दूसरे दिन प्रान्तीय पदाधिकारियों और राष्ट्रीय कार्यकारिणी की मीटिंग आयोजित की गई, जिसमें आम सभा से प्राप्त सुझावों पर विचार किया गया। इसी दिन दोपहर में राजस्थान प्रान्त के प्रान्तीय अधिवेशन का आयोजन किया गया; जिसमें राजस्थान प्रदेश की शाखाओं ने अपनी वर्षभर की गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया।

पत्राचार जैनधर्म-दर्शन एवं संस्कृति सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम 2003 में प्रवेश

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित जैनविद्या संस्थान, भट्टारकजी की नसियाँ, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-4 द्वारा निर्धारित उपर्युक्त पाठ्यक्रम भारत स्थित उन अध्ययनार्थियों के लिये होगा; जिन्होंने किसी भी विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसका माध्यम हिन्दी भाषा होगा। पाठ्यक्रम का सत्र 1 जनवरी, 2003 से 31 दिसम्बर 2003 तक रहेगा। निर्धारित आवेदन-पत्र जयपुर कार्यालय से मंगवाकर तुरन्त भरकर भेजें।

प्रवेश-अनुमति मिलने पर पाठ्यक्रम का शुल्क 150/- रुपये ड्राफ्ट द्वारा 30-11-2002 तक भेजना होगा। **- डॉ. कमलचन्द सौगाणी**

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 56

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

चाहे वह निर्मल पर्याय हो, चाहे वह विकारी पर्याय हो; आखिर वह एक समय में नष्ट होनेवाली है, अनित्य है, परिवर्तनशील है। वह अच्छी है या बुरी है – इससे क्या फर्क पड़ता है।

कोई व्यक्ति एक सैकेन्ड को आये और उसी समय वह जानेवाला हो; तब वह सुंदर है या कुरूप है, उसके बाल सफेद हैं या काले हैं – इससे हमें क्या लेना–देना है। इस बात का विचार क्या करना कि वह अच्छा है या बुरा है; क्योंकि वह एक समय में जानेवाला है। जिसने उस व्यक्ति से प्रीति की, उसके भाग्य में जीवनभर दुःखी होना ही है। जीवनभर रोने के अलावा उसके पास कुछ शेष रहनेवाला नहीं है।

ऐसे ही जो पर्याय नष्ट होनेवाली है, उसमें यदि इस जीव ने अपनत्व किया तो यह अनंत दुःखी ही होगा। अतः जो नष्ट होनेवाली, अनादि–अनंत नहीं है; वह पर्याय चाहे निर्मल हो अथवा विकारी हो; परंतु उससे भी भगवान आत्मा पार है।

पूर्व प्रकरण में तो यह कहा था कि वह निर्मल पर्याय राग जैसी नहीं है; क्योंकि राग तो परपुरुष के संयोग से उत्पन्न हुए पुत्र जैसा है एवं निर्मल पर्याय स्वपति के संयोग से हुए पुत्र जैसी है। यह तो सम्मान दिलानेवाली है, गौरव बढ़ानेवाली है।

क्या परपुरुष से उत्पन्न होनेवाली संतान की अपेक्षा स्वपति से होनेवाली संतान अच्छी नहीं है ?

अरे भाई ! ब्रह्मचारी के लिए ये दोनों ही हेय हैं। यदि दीक्षा लेना है या ब्रह्मचारी रहना है; तब तो स्वस्त्री एवं परस्त्री दोनों को समान कहा जाएगा न ? दूसरी दृष्टि से देखें तो दोनों में बहुत अंतर है। जो परस्त्री को स्वस्त्री के समान मानेगा, वह मानव नहीं रहेगा, पशु बन जाएगा और जो स्वस्त्री को परस्त्री के समान मानेगा, वह ब्रह्मचारी हो जाएगा।

पहले निर्मल और विकारी पर्याय में भेद डाला था, इस प्रकरण में यह कहा जा रहा है कि निर्मल पर्याय भी विकारी पर्याय के समान क्षणभंगुर होने से स्व की सीमा में नहीं आती; वह भी पर ही है। यह तीसरे प्रकार का भेदविज्ञान है।

उक्त छन्दानुसार 3 प्रकार के भेदविज्ञान निम्नानुसार हैं –

1॰ देहदेवल में रहे, पर देह से जो भिन्न है।

2॰ है राग जिसमें, किन्तु जो उस राग से भी अन्य है।

3॰ गुणभेद से भी भिन्न है, पर्याय से भी पार है।

इन तीन प्रकार के भेदविज्ञान में स्त्री–पुत्र, मकान–सम्पत्ति इत्यादि से आत्मा भिन्न है – यह भेदविज्ञान प्रथम भेद–विज्ञान के रूप में समाहित किया जाय तो प्रकरण अनुसार चार प्रकार के भेदविज्ञान स्पष्ट होते हैं।

1॰ स्त्री पुत्रादि से 2॰ देह से 3॰ राग से और 4॰ गुण भेद तथा निर्मल पर्याय से – इसप्रकार भेदविज्ञान के चार स्तर हो गये।

यह भगवान आत्मा 'पर्याय से भी पार है' – इसकी व्याख्या हुई। अब यह भगवान आत्मा 'गुणभेद से भी भिन्न है' – इसकी व्याख्या करते हैं।

सर्वप्रथम स्त्री–पुत्रादि एवं शरीररूप पर से; फिर विकारी पर्याय से, पश्चात् निर्मल पर्याय से; इस भगवान आत्मा का भेदविज्ञान कराया।

अब आचार्य कहते हैं कि यद्यपि यह भगवान आत्मा अनंत गुण सहित है, असंख्यात प्रदेशी है; तथापि भगवान आत्मा में अनंतगुण और असंख्य प्रदेश का भेद नहीं है। गुण पृथक्–पृथक् हैं – यह मात्र जानने के लिए प्रयोजनभूत है; परन्तु गुण अभेद, अखण्ड हैं और कभी अलग–अलग नहीं होंगे। देह और आत्मा अलग–अलग हैं; अतः वे एक दिन अलग–अलग हो जाएँगे।

यद्यपि ये गुण भाव की अपेक्षा, परिभाषा की अपेक्षा, कार्य की अपेक्षा पृथक्–पृथक् हैं; तथापि वे कभी पृथक्–पृथक् नहीं होंगे; क्योंकि इन दोनों में प्रदेशभेद नहीं है। ज्ञान, दर्शन, सुख और वीर्य में प्रदेशभेद नहीं है; अतः वे भिन्न–भिन्न होते हुए भी कभी पृथक् नहीं हो सकते हैं, अभेद हैं। इस आत्मा में गुणों का भेद होने पर भी यह आत्मा गुणभेद से भिन्न है। प्रदेशों का भेद होने पर भी, प्रदेशों की अपेक्षा भिन्नता होने पर भी प्रदेशभेद से भगवान आत्मा भिन्न है। भेदाभेद वस्तु का स्वरूप है; अतः दोनों कथंचित् परस्पर भिन्न हैं एवं कथंचित् अभिन्न हैं।

प्रश्न – अभिन्न पक्ष को तो रखा जा रहा है एवं भिन्नता वाले पक्ष को हटाया जा रहा है – ऐसा क्यों ? जबकि दोनों वस्तु के स्वरूप हैं।

उत्तर – अरे भाई ! आचार्य बिना प्रयोजन कोई कार्य नहीं करते हैं। अकलंकदेव लिखते हैं – प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते।

राजवार्तिक का यह उद्धरण बताता है कि प्रयोजन के बिना तो मंद से मंद बुद्धि भी प्रवृत्ति नहीं करता है। बनिया यदि नीचे झुका है तो कुछ न कुछ लेकर ही उठेगा। गाय का गोबर यदि जमीन पर गिरा है तो कुछ न कुछ लेकर ही उठेगा।

इस कथन का आशय यह है कि जब भेद पर दृष्टि डालते हैं, तब विकल्प उत्पन्न होते हैं – ऐसी विकल्पात्मक स्थिति में आत्मा का अनुभव नहीं होता है; अतः भेद का निषेध है और अभेद का समर्थन है। इसप्रकार यह भगवान आत्मा गुणभेद से भी भिन्न है।

यह तीसरे या चौथे क्रम के भेदविज्ञान का दूसरा भाग है।

प्रश्न – इस भेदविज्ञान के दो अलग–अलग भाग क्यों किए ? इन दोनों भागों को स्वतंत्र क्रम दिया जा सकता था।

उत्तर – 'गुण भेद से भिन्न' एवं 'पर्याय से पार' – ये दोनों एक नय के विषय हैं। अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनय में गुणभेद भी आता है और निर्मलपर्याय भी आती है। यदि इन्हें अलग से पृथक् क्रम दे देते तो जिनवाणी में नय भी पृथक् से बनाने पड़ते। यदि इनके दो टुकड़े करेंगे तो इनके पृथक् से दो नय बनाने पड़ेंगे। चार व्यवहारनय से पाँच व्यवहारनय बनाने पड़ेंगे; इसलिए इन दोनों को एक कहा। पर्याय से पार और गुणभेद से भिन्न, प्रदेशभेद से भिन्न एक ही नय का विषय होने से इन्हें एक ही भेद में लिया है।

गुणभेद से भिन्न और पर्याय से पार – ऐसा भगवान आत्मा ही साधकों की साधना का एक मात्र आधार है। आत्मा के साधक जितने भी जीव हैं, उनकी साधना का एकमात्र आधार यही भगवान आत्मा है।

स्त्री–पुत्र, मकान–जायदाद सहित आत्मा, देहसहित आत्मा, रागसहित आत्मा, पर्यायसहित आत्मा, गुणभेद सहित आत्मा साधकों की साधना का आधार नहीं हो सकता।

चतुर्थ गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थानवर्ती तक के जीव साधक कहलाते हैं। एक पैर पर खड़े हो जाना, क्रियाकाण्ड करना – इसका नाम साधना नहीं है। ज्ञानगुण द्वारा अपनी आत्मा को 'ये ही मैं हूँ' – ऐसा जानना ही ज्ञानगुण द्वारा आत्मा की साधना है।

'यही मैं हूँ' – इसप्रकार आत्मा को देखना ही श्रद्धागुण के द्वारा आत्मा की साधना है। ज्ञान ने आत्मा को जाना था, दर्शन ने आत्मा को देखा था; अब उस आत्मा को ही निरन्तर देखता रहे, जानता रहे – ऐसा देखे–जाने कि तृप्ति ही न मिले; इसे ही चारित्रगुण द्वारा आत्मा की साधना कहते हैं।

सौधर्म इन्द्र ने भगवान को देखा; तब सहस्र नेत्र बनाकर देखा; लेकिन तब भी उनका मन तृप्त नहीं हुआ; ऐसे ही भगवान आत्मा को देखते रहें और तृप्ति ही न हो। यही चारित्रगुण के द्वारा आत्मा की आराधना करना है। यही साधकों की साधना है। 'एक ही आधार है' अर्थात् आत्मा को देखते–जानते रहना यही साधकों की साधना का आधार है और कोई आधार नहीं है।

यहाँ आधार का अर्थ सहारा नहीं है, आधार का अर्थ सहयोग नहीं है। आत्मा किसी को सहारा नहीं देता और न ही उसे किसी के सहयोग की आवश्यकता होती है। यहाँ सहारे या सहयोग का अर्थ मात्र इतना ही है कि वह भगवान आत्मा ध्येय है, श्रद्धेय है और ज्ञेय भी है।

प्रश्न – जिस शुद्धात्मा की इतनी प्रशंसा कर रहे हैं, जिस शुद्धात्मा के इतने गीत गाए जा रहे हैं; वह शुद्धात्मा है कहाँ ?

उत्तर – अरे भाई ! वह शुद्धात्मा मैं ही हूँ, तू ही है; मेरे लिये मैं हूँ और तेरे लिये तू ही है।

मेरे अंदर आत्मा है – ऐसा कहकर हम गौरव का अनुभव करते हैं, इस पक्ष के प्ररूपक भजन भी मिलते हैं, उनमें यह कहा जाता है कि मेरा नाथ तो मेरे ही अंदर बैठा है।

नाथ अंदर बैठा है तो फिर तू कौन है ? अरे भाई ! मैं ही नाथ हूँ। मैं ही शुद्धात्मा हूँ – ऐसा स्वीकार अंतर से आना चाहिए, जैसाकि मेरे द्वारा लिखित 'बारहभावना : एक अनुशीलन' नामक पुस्तक में संवरभावना में काव्यरूप में कहा है –

मैं हूँ वही शुद्धात्मा चैतन्य का मार्तण्ड हूँ।
आनंद का रसकन्द हूँ मैं ज्ञान का घनपिण्ड हूँ।।
मैं ध्येय हूँ, श्रद्धेय हूँ, मैं ज्ञेय हूँ, मैं ज्ञान हूँ।
बस एक ज्ञायकभाव हूँ मैं, मैं स्वयं भगवान हूँ।।

मैं ध्येय हूँ अर्थात् ध्यान योग्य पदार्थ यदि कोई है तो वह मैं ही हूँ; मैं श्रद्धेय हूँ अर्थात् यदि श्रद्धान करनेयोग्य कोई पदार्थ जगत में है तो वह मैं ही हूँ; मैं ज्ञेय हूँ अर्थात् यदि जाननेयोग्य कोई पदार्थ है तो वह मैं ही हूँ।

जाननेयोग्य और जानना इसमें बहुत अंतर है। जैसे हम लोकव्यवहार में कहते हैं कि खाद्यपदार्थ तो बहुत हैं; लेकिन यह पदार्थ खानेयोग्य हैं, यहाँ खानेयोग्य का अर्थ यह है कि यह ऐसा पदार्थ है कि जिसके खाने में आनंद आएगा।

ऐसे ही यहाँ ध्यान करनेयोग्य का अर्थ यह है कि इसके ध्यान करने से अतीन्द्रिय आनंद की कणिका जग जायेगी।

मैं श्रद्धान हूँ, मैं ध्यान हूँ, – इसप्रकार नहीं कह सकते हैं; क्योंकि श्रद्धान पर्याय का नाम है, ध्यान पर्याय का नाम है और मैं तो पर्याय से पार ध्येय तत्त्व हूँ।

श्री निहालचंद सौगानी ने लिखा है कि मैं किसका ध्यान करूँ ? पर्याय को मेरा ध्यान करना हो तो करे, नहीं करना हो तो नहीं करे; जो पर्याय मेरा ध्यान करेगी, वह महान बनेगी; जो ध्यान नहीं करेगी, वह महान नहीं बनेगी। इससे मुझमें कुछ अंतर आनेवाला नहीं है। मैं ध्येय हूँ, श्रद्धेय हूँ; पर मैं श्रद्धान अथवा ध्यान नहीं हूँ। परन्तु मैं ज्ञान भी हूँ और ज्ञेय भी हूँ। ज्ञान अर्थात् ज्ञायक हूँ। ज्ञानगुण स्वपरप्रकाशक है; अतः ज्ञाता भी मैं हूँ और ज्ञेय भी मैं ही हूँ। अधिक क्या कहें –

बस एक ज्ञायकभाव हूँ मैं, मैं स्वयं भगवान हूँ।

मैं ही मेरा भगवान हूँ, दूसरे भगवान नहीं हैं – ऐसी बात नहीं है; अपितु वे मेरे भगवान नहीं हैं, वे स्वयं के भगवान हैं। मैं ही भगवान हूँ – यह जानना–पहिचानना ही ज्ञान है, श्रद्धान है; इसे जानना ही सम्यग्ज्ञान है। मुझे जगत जाने तो ठीक ! नहीं जाने तो ठीक; परंतु इससे मुझमें कोई अंतर आनेवाला नहीं है। जगत के संदर्भ में न जानने का निषेध है और न ही नहीं जानने का निषेध है। जगत के संदर्भ में जो होना है, वह हो; पर्याय की योग्यता के अनुसार जिस पर्याय में जिसको ज्ञेय बनाने की योग्यता होगी, वह यथासमय ज्ञेय बन जाएगा। (Øe'k%)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

पुरस्कारों के लिये नाम आमंत्रित

(1) अहिंसा इन्टरनेशनल डिप्टीमल आदीश्वर लाल जैन साहित्य पुरस्कार - (राशि - 31000), जैन साहित्य के विद्वान को उनके समग्र साहित्य अथवा एक कृति की श्रेष्ठता के आधार पर। लिखित पुस्तकों की सूची तथा अपनी 2 श्रेष्ठ पुस्तकें भेजें।

(2) अहिंसा इन्टरनेशनल भगवानदास शोभालाल जैन शाकाहार पुरस्कार - (राशि - 21000), शाकाहार प्रसार के क्षेत्र में कार्य कर रहे कर्मठ कार्यकर्त्ता को उनके कार्य की श्रेष्ठता के आधार पर ।

(3) अहिंसा इन्टरनेशनल रघुवीरसिंह जैन जीव रक्षा पुरस्कार - (राशि - 21000), जीव रक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे कर्मठ कार्यकर्त्ता को उनके कार्य की श्रेष्ठता के आधार पर।

(4) अहिंसा इन्टरनेशलन प्रेमचन्द जैन पत्रकारिता पुरस्कार - (राशि - 21000), रचनात्मक जैन पत्रकारिता की श्रेष्ठता के आधार पर।

नाम का सुझाव स्वयं लेखक/कार्यकत्ता/संस्था अथवा अन्य व्यक्ति द्वारा 31 जनवरी 2003 तक निम्न पते पर लेखक/ कार्यकर्त्ता/ पत्रकार के पूरे नाम व पते, जीवन-परिचय संबंधित क्षेत्र में कार्य सहित व पोसपोर्ट आकार के फोटो सहित आमंत्रित हैं। पुरस्कार नई दिल्ली में भव्य समारोह में भेंट किये जायेंगे। सम्पर्क -

प्रदीपकुमार जैन

4687, उमराव गली, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-110006

फटाके फोड़ने से हानि ही हानि - स्वयं विचार करें ...

1. अनन्त निर्दोष जीवों की हत्या 2. हिंसा के महापाप का बन्ध।
3. धन का नाश 4. शारीरिक क्षति और प्राण-हानि
5. समय की बर्बादी 6. वायु प्रदूषण
7. गन्दगी का साम्राज्य 8. देश की सम्पत्ति का नाश

जरा विचारिये ! हमें यदि अग्नि का स्पर्श भी हो जाये तो हमें भयंकर पीड़ा होती है तो हमारे द्वारा फोड़े व चलाये जानेवाले पटाखों से एकेन्द्रिय, द्वी न्द्रिय आदि जीवों की चिता ही जल जाती होगी। क्या यही है हमारी अहिंसा ? क्या महावीर ने हमें यह उपदेश दिया था कि हम निर्वाण महोत्सव पर ही हिंसा का तांडव मचायें ? भगवान महावीर ने कहा कि समस्त आत्मायें बराबर है, कोई छोटा बड़ा नहीं है, सभी को समानरूप से जीने का अधिकार है। तो फिर फटाकों के द्वारा हमें असंख्य जीवों के प्राण लेने का क्या अधिकार है ? स्वयं विचार करें।

नवम्बर माह में आनेवाली 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

3 नवम्बर - भगवान पद्मप्रभ का जन्म एवं तप कल्याणक
4 नवम्बर - भगवान महावीर का मोक्षकल्याणक
6 नवम्बर - भगवान पुष्पदंत का ज्ञानकल्याणक
10 नवम्बर - भगवान नेमिनाथ का गर्भकल्याणक
16 नवम्बर - भगवान अरनाथ का ज्ञानकल्याणक
19 नवम्बर - भगवान संभवनाथ का जन्मकल्याणक
29 नवम्बर - भगवान महावीर का तपकल्याणक

वेदी शिलान्यास सम्पन्न

सागर (म.प्र.) : यहाँ निर्माणाधीन महावीर जिनालय में ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के सान्निध्य में वेदी-शिलान्यास का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शिलान्यास विधि श्री पवनकुमारजी जैन अलीगढ़ तथा श्री कृष्णचन्दजी जैन (लाल दुकान) सागर द्वारा सम्पन्न हुई। इसके पूर्व श्री अशोककुमारजी भोपाल सुभाष ट्रांसपोर्ट द्वारा झण्डारोहण किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित सुबोधकुमारजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित रूपचंदजी बण्डा, पण्डित अरुणजी मोदी के अतिरिक्त स्थानीय विद्वानों का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ।

इस वर्ष प्रशिक्षण शिविर भी जयपुर में

यह तो आपको विदित ही है कि श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में प्रतिवर्ष दो शिविर लगते हैं; परन्तु इस वर्ष प्रशिक्षण-शिविर भी जयपुर में ही लगेगा। तीनों शिविरों की निर्धारित तिथियाँ इसप्रकार हैं -

प्रशिक्षण शिविर - 11मई से 28 मई 2003 तक
शिक्षण शिविर - 27 जुलाई से 5 अगस्त 2003 तक
शिक्षण शिविर - 2 अक्टूबर से 11 अक्टूबर 2003 तक

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **नवम्बर (प्रथम) 2002**
आई. आर. / R. J. **3002/02**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर**, एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 705581, 707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 704127